

# डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, जोहानिन थियोलाॅजी, सत्र 17, मोक्ष, चुनाव

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन हैं जो यूहन्ना धर्मशास्त्र पर अपने व्याख्यान दे रहे हैं। यह सत्र 17 है, मोक्ष, चुनाव।

हम यूहन्ना धर्मशास्त्र पर अपने व्याख्यान जारी रखते हैं।

समीक्षा करने से पहले, आइए प्रार्थना करें। दयालु पिता, हम आपके पुत्र, हमारे उद्धारकर्ता और प्रभु के माध्यम से आपके पास आते हैं। आपके वचन, उसके हर भाग के लिए धन्यवाद। सुसमाचारों के लिए धन्यवाद। चौथे सुसमाचार के लिए धन्यवाद। इसे हमारे लिए खोलें और हमें अपनी आत्मा के लिए खोलें और हमारे जीवन में काम करें। हम मध्यस्थ यीशु मसीह के माध्यम से प्रार्थना करते हैं। आमीन।

यूहन्ना धर्मशास्त्र, हमने अब तक यूहन्ना शैली, यूहन्ना के सुसमाचार की संरचना, एक प्रस्तावना, संकेतों की पुस्तक और महिमा की पुस्तक के अनुरूप एक निकाय और फिर अध्याय 21 में एक उपसंहार के बारे में बात की है। चौथे सुसमाचार के उद्देश्य, मुख्य रूप से सुसमाचार प्रचार, विदाई प्रवचनों और 17 में अंतिम प्रार्थना के अनुरूप एक द्वितीयक उद्देश्य शिक्षा है, और शायद एक तीसरा क्षमाप्रार्थी उद्देश्य भी है।

मैं हूँ, ये कथन सात हैं, लेकिन इनके केवल तीन अलग-अलग अर्थ हैं, और यूहन्ना 14 6 उन तीन अलग-अलग अर्थों का सारांश देता है। यीशु ही मार्ग है, दुनिया का एकमात्र उद्धारकर्ता है। वह सत्य है, परमेश्वर का प्रकटकर्ता है।

वह जीवन है, जीवन देने वाला है, वह जो परमेश्वर के सभी लोगों को अनन्त जीवन देता है, जो उस पर विश्वास करने वाले सभी लोगों के लिए अलग-अलग और समान रूप से सत्य है। वह वही है जो करता है; हम यीशु के संकेतों और चमत्कारों का अध्ययन करते हैं जो उसके व्यक्तित्व और परमेश्वर की योजना में उसके स्थान के बारे में बताते हैं। समय की बातें, मेरा समय अभी नहीं आया है।

फिर 12 का अंत, 13 का आरंभ, समय आ गया है। मेरा समय आ गया है। 17:1 भी।

यीशु के प्रति प्रतिक्रियाएँ पहले से ही प्रस्तावना में हैं, जैसा कि कई अन्य विषयों में है, यीशु के प्रति दो प्रतिक्रियाएँ 1:10 और 11 में नकारात्मक प्रतिक्रियाएँ दी गई हैं, और 12 और 13 में सकारात्मक प्रतिक्रियाएँ दी गई हैं, और यह पुस्तक की रूपरेखा बताती है। 12:37 यीशु के प्रति प्रतिक्रिया के संदर्भ में संकेतों की पुस्तक का सारांश देता है। हालाँकि यीशु ने उनकी उपस्थिति में कई अन्य संकेत किए थे, फिर भी वे उस पर विश्वास नहीं करेंगे जैसा कि यशायाह ने

भविष्यवाणी की थी, और यूहन्ना यहाँ तक कहता है कि वे उसकी शिक्षण अक्षमता पर विश्वास नहीं कर सकते थे।

लेकिन शुक्र है कि यूहन्ना 20:30 और 31 में उद्देश्य कथन है। ये संकेत इसलिए लिखे गए हैं ताकि आप विश्वास कर सकें कि यीशु मसीह है, परमेश्वर का पुत्र है, और विश्वास करके, उसके नाम में अनन्त जीवन पाएँ। यह अधिक पूर्ण है, किसी भी मामले में बेहतर है, महिमा की पुस्तक या उत्कर्ष की पुस्तक में, जैसा कि एंड्रियास कोस्टेनबर्गर कहते हैं, जहाँ शिष्य यीशु पर विश्वास करते हैं, उनका विश्वास मजबूत होता है और वे आभारी होते हैं।

हम सकारात्मक प्रतिक्रिया के लिए आभारी हैं। यीशु के गवाहों को पहले ही प्रस्तावना में पेश किया जा चुका है, खास तौर पर जॉन द बैपटिस्ट, और फिर पाँचवें अध्याय में, बाद में आठवें अध्याय में, यीशु पर मुकदमा चलाया जाता है, ब्रह्मांडीय मुकदमा, कुछ लोगों ने इसे उनका पूरा जीवन कहा है। हाँ, अंत में एक मुकदमा है।

यूहन्ना इसे नज़रअंदाज़ नहीं करता, बल्कि वह इसे कम करके दिखाता है और दिखाता है कि यीशु पूरे समय परीक्षण में था और पिता ने अपने प्रिय पुत्र को बहुत सारी गवाहियाँ दीं। पिता खुद गवाही देता है, जैसा कि यीशु भी देता है। दो गवाहों की गवाही सच है।

आत्मा गवाही देती है, 15 का अंत। और शिष्य भी। जॉन द बैपटिस्ट, ओल्ड टेस्टामेंट ने मुझे दूसरों की एक श्रेणी दी, जैसे कि एक सामरी महिला। मेरे पास सात हैं, और यह कृत्रिम हो सकता है, मैं मानता हूँ।

यीशु की तस्वीरें। हमने उनमें से कई का अध्ययन किया, साथ ही उनके उद्धार कार्य की तस्वीरें भी। फिर हमने पवित्र आत्मा और चौथे सुसमाचार में उसकी भूमिका के बारे में सोचा।

न्यूनतम, संकेतों की पुस्तक, महिमा की पुस्तक में समकालिकता के समान, गतिशील शिक्षा जो बाइबल में कहीं और नहीं दी गई है। अद्भुत नई वाचा की शिक्षा, जो केवल पेंटेकोस्ट के बाद ही संभव है, जब यीशु ने चर्च पर पवित्र आत्मा को उंडेला। परमेश्वर के लोगों, हमने जॉन के सुसमाचार के भीतर सात अलग-अलग दृष्टिकोणों से एक उपेक्षित विषय को देखा।

यूहन्ना के पास चर्च का सिद्धांत है। परमेश्वर का प्रेम अविश्वसनीय है। अब, चुनाव और अनन्त जीवन में, पिता लोगों को पुत्र के पास खींचता है, पुत्र उन्हें अंतिम दिन जिलाता है, और पुत्र उन्हें रखता है और पिता ने जो कुछ उसे दिया है, उसमें से कुछ भी नहीं खोता।

और हम एस्केटोलॉजी, अंतिम बातों के सिद्धांत के साथ समाप्त करते हैं, विशेष रूप से पहले से ही पर जोर देते हुए, जिस पर जॉन वास्तव में जोर देता है, और अभी तक नहीं। चुनाव। जॉन में पॉल के पूर्वनिर्धारित या पूर्वनिर्धारित, चुनाव के शब्दों का अभाव है।

लेकिन उनके पास चुनाव के सिद्धांत, चुनाव की शिक्षा की कमी नहीं है। हमने कई बार अवधारणा भ्रांति शब्द का उल्लेख किया है। यह दो तरह से काम करता है।

एक यह है कि इस बात पर जोर दिया जाए कि किसी खास शब्द के हर इस्तेमाल का हमेशा एक ही मतलब हो। यह संभव है, लेकिन यह हमारी अपनी आधुनिक अंग्रेजी में सामान्य नहीं है। और बाइबल में, आमतौर पर ऐसा नहीं होता।

इसलिए, सभा का अर्थ अक्सर चर्च, स्थानीय चर्च, पॉल में सार्वभौमिक चर्च होता है, मैं अब सोच रहा हूँ, लेकिन यह एथेंस में यूनानियों की सभा भी थी। जब इफिसुस में भीड़ उसे निगलने के लिए तैयार थी, तो शहर के क्लर्क ने कहा, "देखो, हमारे पास एक बैठक है, हम एक लोगों के रूप में मिलते हैं, और हमारे पास अदालतें और नियम और कानून हैं।"

हम बर्बर लोगों की तरह व्यवहार कर रहे हैं। हमारी समस्या क्या है? वहाँ सभा शब्द का अर्थ यीशु और पवित्र आत्मा में परमेश्वर की कलीसिया नहीं था। इसका अर्थ था परमेश्वर के लोगों की सभा।

दूसरा दुरुपयोग, शब्द अवधारणा भ्रांति का दूसरा कमीशन, कहता है कि किसी विशेष अवधारणा को व्यक्त करने के लिए आपके पास एक कैचवर्ड या शब्द होने चाहिए। न केवल कैचवर्ड कभी-कभी अवधारणा को संप्रेषित भी नहीं करते हैं, बल्कि वे आमतौर पर पूरी तरह से एक-केंद्रित नहीं होते हैं - एक कैचवर्ड, एक अर्थ। लेकिन एक ही अवधारणा को अलग-अलग तरीकों से संप्रेषित किया जा सकता है।

हमने इसे चर्च के सिद्धांत के साथ देखा। यूहन्ना ने एक बार भी "चर्च" शब्द का प्रयोग नहीं किया। लेकिन चर्च परमेश्वर के लोग हैं, पिता द्वारा पुत्र को दिए गए लोग, दाखलता, दाखलता में शाखाएँ, भेड़ें, और इसी तरह के अन्य लोग, जिनके लिए यीशु ने प्रशंसा की, और यह यूहन्ना 17 में उनकी महायाजकीय प्रार्थना में है।

तो यहाँ, हमारे पास चुनाव की वह भाषा नहीं है जिसका हम पौलुस से उपयोग करते हैं। लेकिन हमारे पास चुनाव का सिद्धांत है। यूहन्ना इस सिद्धांत को तीन चित्रों, छवियों और रूपकों के साथ संप्रेषित करता है। बाइबिल धर्मशास्त्र न केवल सृष्टि, पतन, उद्धार और फिर पुनर्स्थापना और पूर्णता के संदर्भ में बाइबिल की कहानी के माध्यम से सिद्धांतों का पता लगाता है।

यह अलग-अलग बाइबिल लेखकों और उनके मुख्य पुरा पर भी ध्यान केंद्रित करता है। हम जॉन के कॉर्पस के साथ और भी अधिक संकीर्ण रूप से काम कर रहे हैं; हम सिर्फ उसके सुसमाचार के साथ काम कर रहे हैं। और कॉर्पस के भीतर, हम चित्र, रूपक, विषय, रूपक और विचार देखते हैं। उनमें से तीन चुनाव के सिद्धांत को संप्रेषित करते हैं: पिता लोगों को पुत्र को देता है, जो जॉन में वास्तव में एक प्रमुख विषय है।

मैं छह स्थानों को नहीं छोड़ सकता, जिनमें से चार महान उच्च पुरोहित प्रार्थना में हैं। पिता द्वारा लोगों को पुत्र को सौंपने की यह धारणा प्रार्थना को निर्धारित करती है और इसे धार्मिक संदर्भ में स्थापित करती है।

पुत्र समस्त पवित्रशास्त्र में, यूहन्ना 15, पद 16 और 19 में, विशिष्ट रूप से लोगों को चुनता है। जैसा कि कार्ल बार्थ ने देखा, और जैसा कि डी.ए. कार्सन सहमत हैं, यीशु ही चुनाव का लेखक है।

और फिर उन लोगों की पूर्व या पूर्ववर्ती पहचान का यह मूल भाव है जो परमेश्वर के लोग हैं, चुने हुए हैं, और जो परमेश्वर के लोग नहीं हैं, गैर-चुने हुए हैं। यह विषय जितना मैंने सोचा था उससे कहीं अधिक प्रमुख है, जैसा कि कोस्टेनबर्गर ने मुझे दिखाया है। चौथे सुसमाचार में चुनाव, पिता लोगों को पुत्र को देता है; हम इसे अध्याय छह में पाते हैं।

मैं जीवन की रोटी हूँ, यीशु यूहन्ना 6:35 में कहते हैं। जो कोई मेरे पास आएगा, वह भूखा न रहेगा। जो मुझ पर विश्वास करेगा, वह कभी प्यासा न रहेगा।

जहाँ हमारे लिए आने का मतलब यीशु पर विश्वास करना है। लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ, तुमने मुझे देखा है, और तुम विश्वास नहीं करते। यह सब जो पिता मुझे देता है वह मेरे पास आएगा।

यह वही है। जो कुछ पिता मुझे देता है, वह सब मेरे पास आएगा। यह यूहन्ना 6:37 और 39 होना चाहिए।

मेरी गलती। पिता ने जो कुछ मुझे दिया है, वह सब मेरे पास आएगा। सभी चुने हुए लोग मुझ पर विश्वास करेंगे, यही इसका अर्थ है।

और जो कोई भी मेरे पास आता है, मैं उसे कभी बाहर नहीं निकालूँगा। मैं उसे बचाकर रखूँगा, मैं उसे बचाकर रखूँगा। इसे शाश्वत सुरक्षा कहते हैं, मुझे लगता है कि इसे संरक्षण कहना बेहतर होगा।

मैं ऐसा क्यों कह रहा हूँ? शाश्वत सुरक्षा पर्याप्त गतिशील नहीं है। ऐसा लगता है कि बैंक में पैसा है, और आप अपनी इच्छानुसार जीवन जी सकते हैं। और यह सच नहीं है।

हालाँकि मैं शब्दावली को बदलने नहीं जा रहा हूँ और इसे संतों की दृढ़ता कहा जाता है। क्योंकि मैं स्वर्ग से अपनी इच्छा पूरी करने नहीं आया हूँ, बल्कि उसकी इच्छा पूरी करने आया हूँ जिसने मुझे भेजा है और यह उसकी इच्छा है जिसने मुझे भेजा है कि जो कुछ उसने मुझे दिया है, उसमें से मैं कुछ भी न खोऊँ। फिर से वही विषय है।

यीशु ने कुछ लोगों को पुत्र को दे दिया। क्षमा करें, पिता ने कुछ लोगों को पुत्र यीशु को दे दिया 39. पिता की यही इच्छा है जिसने मुझे भेजा है कि जो कुछ उसने मुझे दिया है, उसमें से मैं कुछ भी न खोऊँ, बल्कि उसे अंतिम दिन फिर से जिलाऊँ। क्योंकि मेरे पिता की यही इच्छा है कि जो कोई पुत्र को देखे और उस पर विश्वास करे, उसे अनन्त जीवन मिले, और मैं उसे अंतिम दिन फिर से जिलाऊँगा।

पिता अपने बेटे को लोग देता है। हमें कभी नहीं बताया जाता कि पिता के पास ये लोग कैसे हैं। वह बस उन पर दावा करता है।

वह उन्हें चुनता है, इसलिए वे उसके हैं। चौथे सुसमाचार में कभी भी ऐसा संकेत नहीं मिलता कि पिता उन्हें इसलिए चुनता है क्योंकि वह पहले से ही देख लेता है कि वे उस पर विश्वास करेंगे। वास्तव में, क्रम बिल्कुल इसके विपरीत है।

पिता मुझे देता है वह सब मेरे पास आएगा। चुने हुए लोग विश्वास करते हैं। वे चुने जाने के लिए विश्वास नहीं करते।

वे चुनाव करते हैं, वे विश्वास करते हैं, क्योंकि ईश्वर ने उन्हें चुना है। व्यवस्थित धर्मशास्त्र, इसकी ताकत ही इसकी कमजोरी है। इसकी ताकत यह है कि यह चीजों को क्रम में रखता है।

यह हमें समझने में मदद करता है। इसकी कमजोरी यह है कि यह चीजों को क्रम में रखता है। यह हमारी मदद करता है।

इसलिए, आप सत्य के अलावा कुछ भी नहीं कह सकते हैं और फिर भी त्रुटि संचारित कर सकते हैं क्योंकि आप पूरक सत्य संचारित नहीं करते हैं, जिसका मेरे पास मूल के साथ अच्छा शब्द संतुलन नहीं है। इसलिए, यह संप्रभुता का जोर मानवीय जिम्मेदारी को खत्म कर सकता है। यह जॉन के सुसमाचार में नहीं है।

तो, फिर, आप पूर्ण ईश्वरीय संप्रभुता और वास्तविक मानवीय जिम्मेदारी के बीच किसी तरह के विरोधाभास पर पहुंच जाते हैं। मैं फैंसी शब्दों का उपयोग कर सकता हूँ और कह सकता हूँ, ओह, यह सिर्फ एक विरोधाभास नहीं है। यह एक गतिशील अंतर्क्रिया है।

और यह सच है, लेकिन यह अभी भी विरोधाभासी है। जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, उसे पूरी तरह से समझना अभी भी हमारी क्षमता से परे है। श्लोक 35 कभी प्यासा नहीं होगा।

37, पिता की ओर से मुझे जो भी उपहार मिले हैं, वे सब मेरे पास आएंगे। 35 में, यीशु के पास आना यीशु पर विश्वास करने के समान था। किसी भी मामले में, हम 10:29 में चुनाव की वही तस्वीर देखते हैं।

यहाँ हम मानवीय जिम्मेदारी को विफल होते हुए देखते हैं और ईश्वरीय संप्रभुता एक दूसरे को गले लगाती है। 10:22 उस समय यरूशलेम में समर्पण का पर्व मनाया जा रहा था। सर्दी का मौसम था और यीशु सुलैमान के स्तंभों वाले मंदिर में टहल रहे थे।

तब यहूदियों ने उसके पास आकर कहा, तू हमें कब तक उलझन में रखेगा? यदि तू मसीह है, तो हमें साफ-साफ बता दे। यीशु ने उनको उत्तर दिया, कि मैं ने तुम से कह दिया, और तुम विश्वास नहीं करते, कि वह उन के अविश्वास को दोषी मानता है।

मैं अपने पिता के नाम से जो वचन कहता हूँ, जो काम मैं अपने पिता के नाम से करता हूँ, वे मेरे बारे में गवाही देते हैं। लेकिन तुम मेरी भेड़ नहीं हो क्योंकि तुम विश्वास नहीं करते कि वह ऐसा नहीं कहता, लेकिन यह बिल्कुल सच है। और वास्तव में, यूहन्ना में इस बात पर ज़्यादा ज़ोर दिया गया है।

यदि आप नाकों की गिनती करते हैं, तो कई और मार्ग इस तरह की बातें कहते हैं, लोगों को अविश्वास के लिए दोषी ठहराते हैं, फिर हमारे पास इस तरह की चीज है। लेकिन आप विश्वास नहीं करते क्योंकि आप मेरी भेड़ों में से नहीं हैं। कस्टम बर्गर चार स्थानों की गिनती करता है जहाँ यह सच है।

अहा, ये नोट्स हैं। और मैं, भगवान की इच्छा से, उस पर वापस आऊंगा। मिठाई और ऐपेटाइज़र की तुलना करने से पहले मुझे टेबल पर अन्य चीजें रखनी होंगी।

और वैसे भी, तुम विश्वास नहीं करते क्योंकि तुम मेरी भेड़ें नहीं थे। मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं। मैं उन्हें जानता हूँ, और वे मेरा अनुसरण करते हैं।

मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ, और वे कभी नाश न होंगे। और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा। मेरा पिता, जिसने उन्हें मुझे दिया है, सब से बड़ा है।

और कोई भी उन्हें पिता के हाथ से छीन नहीं सकता। मैं और पिता एक हैं। भेड़ों को बचाने और उनके उद्धार की बात करते समय, यही बात ध्यान में रखी जाती है।

इस प्रक्रिया में, यीशु पिता का वर्णन करते हैं, उन्हें वह कहते हैं जिसने उन्हें दिया, यीशु। सुधारवादी धर्मशास्त्र की अक्सर इस बात के लिए आलोचना की जाती है कि वे चुनाव की किसी तरह की दार्शनिक पूर्वधारणा से शुरू करते हैं और इसे बाइबल में पढ़ते हैं और इस तरह निष्कर्ष निकालते हैं कि आप अपना उद्धार नहीं खो सकते। शायद कुछ लोग ऐसा करते हैं, लेकिन यह गलत है।

यह एक गलत धार्मिक पद्धति है। बाइबल चुनाव की शिक्षा देती है। यह कई अन्य बातें भी सिखाती है।

यह हाइपर-कैल्विनवाद की तुलना में बहुत बेहतर संतुलन में करता है। और यहाँ, जैसा कि मैंने कहा, मुख्य जोर पिता द्वारा लोगों को पुत्र देने पर नहीं है, लेकिन इसका उल्लेख किया गया है, वास्तव में, इसकी आकस्मिक प्रकृति से पता चलता है कि यह जॉन के उपकरण का हिस्सा है। यह उनके विश्वदृष्टिकोण का हिस्सा है।

वह जीवन को इसी तरह देखता है। और इस संदर्भ में, वास्तव में, रोमियों 8 की तरह, परमेश्वर के चुने हुए लोगों पर कौन आरोप लगाएगा? इसका उत्तर है कोई नहीं। परमेश्वर ही है जो धर्मी ठहराता है।

उससे बड़ा कोई न्यायालय नहीं है। यहाँ, चुनाव, पिता द्वारा लोगों को बेटे को देना, परमेश्वर द्वारा अपने संतों के संरक्षण की सेवा में उपयोग किया जाता है। यह यहाँ बाइबल की शिक्षा है।

लेकिन पिता द्वारा लोगों को पुत्र को सौंपने के द्वारा चुनाव के इस मूल भाव को देखने का मुख्य स्थान, इसमें कोई संदेह नहीं है, अध्याय 17 में है। ओह माय, महान प्रार्थना। जब यीशु ने ये शब्द कहे, 17:1, उसने अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाई और कहा, पिता, वह समय आ गया है।

यहाँ समय की कहावतों की महान पूर्ति है। अपने बेटे को महिमा दें, ताकि आपका बेटा आपकी महिमा करे। जब आपने उसे सभी प्राणियों पर अधिकार दिया है, तो इसका मतलब है कि सभी मानव जाति, किस उद्देश्य से? उन सभी को अनन्त जीवन देने के लिए जिन्हें आपने उसे दिया है।

यहाँ दो चक्र हैं। बेटा सभी प्राणियों का स्वामी है। यह पिता की योजना का हिस्सा है।

पिता ने उसे हर मनुष्य पर अधिकार इस उद्देश्य से दिया है, ताकि पुत्र उन सभी चुने हुएों को, जिन्हें पिता ने उसे दिया है, अनन्त जीवन दे सके। यह प्रार्थना की शुरुआत में ही है, और पूरी प्रार्थना में, हम यही धारणा रखते हैं। छठा, मैंने तेरा नाम उन लोगों पर प्रकट किया है जिन्हें तूने संसार से मुझे दिया है।

वे तेरे थे, और तूने उन्हें मुझे दिया, और उन्होंने तेरा वचन माना है। 17:9, मैं संसार के लिए प्रार्थना नहीं कर रहा हूँ, श्लोक 8। वाह। श्लोक 2 जैसा लगता है। तूने बेटे को सभी मनुष्यों पर अधिकार दिया, कि वह उन लोगों को अनन्त जीवन दे जिन्हें तूने उसे दिया है।

यहाँ, मैं दुनिया के लिए प्रार्थना नहीं कर रहा हूँ। बेशक, कभी-कभी यह चौथे सुसमाचार के मुख्य भाग का जोर होगा। परमेश्वर ने दुनिया से प्रेम किया, यहाँ से नहीं।

मैं संसार के लिए प्रार्थना नहीं कर रहा हूँ, बल्कि उन लोगों के लिए जिन्हें तूने मुझे दिया है, क्योंकि वे तेरे हैं। श्लोक 9, जहाँ चुने हुए लोग संसार से अलग हैं। और फिर 24, समापन के निकट सुंदर श्लोक।

पिता, मैं चाहता हूँ कि वे भी जिन्हें तूने मुझे दिया है, मेरे साथ रहें जहाँ मैं हूँ, ताकि तूने मुझे जो महिमा दी है उसे देख सकूँ, क्योंकि तूने मुझे जगत की उत्पत्ति से पहले ही प्रेम किया है। जैसा कि हमने पहले कहा, वह यह प्रार्थना इस दृष्टिकोण से करता है कि उसने इसे पहले ही पिता को लौटा दिया है। वह चाहता है कि पिता ने उसे जो लोग दिए हैं, चुने हुए लोग, पिता की उपस्थिति में महिमा में उसके साथ रहें।

चौथे सुसमाचार में उद्धार का वर्णन सबसे अधिक संख्या में किया गया है, सबसे प्रमुख रूप से पिता द्वारा पुत्र को लोगों को देने के विषय द्वारा। 17 की महान मिशनरी प्रार्थना ईश्वरीय चुनाव द्वारा शासित है। ओह, यह मिशनरी है।

मैं सिर्फ इनके लिए ही प्रार्थना नहीं करता, बल्कि उन लोगों के लिए भी जो उनके वचन के ज़रिए मुझ पर विश्वास करेंगे। श्लोक 20, यह एक मिशनरी प्रार्थना है, लेकिन मिशनरी प्रार्थना परमेश्वर की सर्वोच्च कृपा पर आधारित है, जो पिता द्वारा बेटे को लोगों को देने में प्रदर्शित होती है, स्पष्ट रूप से कहा गया है कि सभी लोग नहीं होने चाहिए। हमने यह कई बार कहा है, लेकिन यह बहुत असामान्य और बहुत उपेक्षित है।

मैं इसे यहाँ फिर से उचित रूप से कहूँगा। दूसरा चुनाव संबंधी मूल भाव यूहन्ना 15 में है, जहाँ यीशु, केवल पूरे शास्त्र में, केवल यहाँ, विशिष्ट रूप से यहाँ, चुनाव के लेखक हैं। संदर्भ चुनाव नहीं है।

संदर्भ फलदायी है। ओह, भगवान नियंत्रण में है। पिता दाख की बारी का रखवाला है।

बेटा दाखलता है। वह इस्राएल की पूर्णता है। वह इस्राएल का प्रतिस्थापन है।

जब तक आप रोमियों 11 को समझते हैं, तब तक परमेश्वर द्वारा इस्राएल को दिए गए उपहार और बुलावा अपरिवर्तनीय हैं। वह जातीय इस्राएलियों के साथ समाप्त नहीं हुआ है और शायद इस्राएल राष्ट्र के साथ भी नहीं। यह एक बहस का विषय है, लेकिन यीशु स्वर्ग से आई सच्ची रोटी है।

वह सच्चा प्रकाश है और वह सच्ची दाखलता है। इसका मतलब यह नहीं है कि इस्राएल झूठा पूर्ववर्ती था। इसका मतलब है कि इस्राएल अधूरा था।

इस्राएल राज्य को नहीं लाया। इस्राएल राष्ट्रों के लिए एक ज्योति बनने की अपनी जिम्मेदारी में विफल रहा। इस्राएल परमेश्वर की दाख की बारी में अच्छे फल पैदा करने की अपनी जिम्मेदारी में विफल रहा, यशायाह परमेश्वर की दाख की बारी के रूप में यशायाह 5। इसलिए, पुत्र इस्राएल का स्थान लेता है, और उस संदर्भ में बार-बार, यह उन लोगों की जिम्मेदारी है जो दाख की बारी में हैं, यानी, जो बाहरी रूप से यीशु के साथ जुड़े हुए हैं, जो उसके वाचा के लोग हैं, यदि आप चाहें, तो उसमें बने रहें।

बार-बार, यूहन्ना ने कभी भी इसे ठीक से परिभाषित नहीं किया, लेकिन जब उसने कहा, मेरे प्रेम में बने रहो, तो वह इसका उतना ही अर्थ लगाता है। पद 9 : जैसा पिता ने मुझसे प्रेम किया है, वैसा ही मैंने भी तुमसे प्रेम किया है। मेरे प्रेम में बने रहो।

बने रहने का मतलब है यीशु के साथ संगति में बने रहना। इसका मतलब सिर्फ उसका नाम पुकारना या उस पर विश्वास जताना नहीं है। इसका मतलब है यीशु के साथ नज़दीकी रिश्ता बनाए रखना, यीशु के साथ संगति में बने रहना।

दूसरे शब्दों में, यह मोक्ष की तस्वीर है। और मनुष्य को इसका पालन करना चाहिए। यही मुख्य बात है, मानवीय जिम्मेदारी।

और चेतावनी दी गई है। अगर आप ऐसा नहीं करते हैं, तो आपको पहली सदी के युग में फिलिस्तीनी अंगूर की खेती के अनुसार, शरद ऋतु की फसल में शाखाओं की तरह इकट्ठा किया जाएगा, और आग में फेंक दिया जाएगा और जला दिया जाएगा। हम यहाँ स्वर्ग और नरक की बात कर रहे हैं।

तो, परमेश्वर की संप्रभुता पर कोई जोर नहीं है, है न? गलत। मुझे लगता है कि शायद, मुझे नहीं पता क्यों, लेकिन मुझे लगता है, शायद, ताकि हम गलत न समझें और पेंडुलम को पूरी तरह से मानवीय स्वतंत्रता की ओर न घुमाएँ और परमेश्वर की संप्रभुता को छोड़ दें, हमारे पास यीशु की संप्रभुता के बारे में एक शब्द है। आपने मुझे नहीं चुना, यूहन्ना 15 की आयत 16।

बेशक, उन्होंने उसे चुना। आखिरकार, आखिरकार, उसने उन्हें चुना। लेकिन मैंने तुम्हें चुना और तुम्हें नियुक्त किया कि तुम जाओ और फल लाओ और तुम्हारा फल बना रहे।

अहा, उनके फल देने के पीछे उनकी पसंद, उनकी नियुक्ति है। आप इसका अनुवाद कर सकते हैं, या कम से कम इसे उनके आदेश, चीजों के क्रम के रूप में समझा सकते हैं। उनके फल देने का आदेश देना।

आपने मुझे नहीं चुना, बल्कि मैंने आपको चुना और नियुक्त किया कि आप जाकर फल लाएँ और आपका फल बना रहे। उनका अंतिम भरोसा उनके बने रहने में नहीं है। उन्हें ऐसा करना ही पड़ता है।

और खास तौर पर, जॉन ने आत्मा की सक्षमता का ज़िक्र नहीं किया, लेकिन यह सच है। यह आएगा। दरअसल, यह पहले भी आ चुका है, इसलिए उसने इसका ज़िक्र किया, बस इस संदर्भ में तुरंत नहीं।

दुनिया उनसे नफरत करती है और उनके शिष्यों से भी नफरत करेगी, यह कहने के बाद वे दोहराते हैं, 19. अगर आप दुनिया के होते, तो दुनिया आपको अपने लोगों की तरह प्यार करती। लेकिन क्योंकि आप दुनिया के नहीं हैं, तो हम इसे कैसे समझा सकते हैं? यीशु का अनुसरण करने का उनका चुनाव? हाँ, ज़रूर।

लेकिन आखिरकार, आप इसे इस तरह से नहीं समझाते। लेकिन क्योंकि मैंने तुम्हें दुनिया से चुना है, इसलिए दुनिया तुमसे नफरत करती है। ओह, यह अध्याय छह जैसा लगता है।

क्या मैंने तुम्हें, उन 12 को नहीं चुना, और तुममें से एक शैतान है? यह एक ही बात नहीं है। यहाँ यहूदा को भी शामिल किया गया है, और यह उसके शिष्य बनने के चुनाव की बात कर रहा है। यही संदर्भ है।

उसके बहुत से शिष्य पीछे मुड़ गए और उसके पीछे नहीं चले। जब उसने अपने मांस खाने, अपने खून पीने और कुछ पूर्वनिर्धारित भाषा के बारे में बात की, तो यह उसे और उनके शिष्यों को नाराज कर गया, और वे चले गए। यहाँ एक चुनाव है ताकि वे अब दुनिया के न रहें, बल्कि वे पिता के हों।

यीशु चुनाव के लेखक हैं। आप एक व्यापक उपचार देखना चाहते हैं। डीए कार्सन, दिव्य संप्रभुता और मानव जिम्मेदारी।

उपशीर्षक पर ध्यान दें, बाइबिल परिप्रेक्ष्य इरादा। इसमें एक विरोधाभास है, एक विरोधाभास है। यह हमारी समझ से परे है।

और इसलिए हम, उस पुस्तक में कार्सन के नेतृत्व का अनुसरण करते हुए जिसका मैंने अभी उल्लेख किया है, सबसे अच्छा जो हम कर सकते हैं वह है मापदंड निर्धारित करना। जो कुछ भी घटित होता है उसमें ईश्वर पूर्ण रूप से सर्वोच्च है। मनुष्य वास्तव में जिम्मेदार हैं, और कभी-कभी ये दोनों दृष्टिकोण ओवरलैप होते हैं।

यूसुफ के भाई उसे गद्दारों के हाथों व्यापारी को बेचने के दोषी थे, और फिर भी यूसुफ उत्पत्ति के अध्याय 45 और 50 में कह सकता था, तुम मुझे यहाँ मिस्र में नहीं लाए, बल्कि परमेश्वर ने लाया। बेशक, वे उसे यहाँ लाए। अंतिम अर्थ में, वे जिम्मेदार नहीं थे।

परमेश्वर ने उनके पाप को नकार दिया। वह पाप का लेखक नहीं है, लेकिन वह कभी-कभी अच्छाई के लिए बुराई का उपयोग करता है, और यही उसने किया। आपने इसे बुराई के लिए इरादा किया था।

मेरे पास उत्पत्ति 45 और 50 से ये उद्धरण हैं। मुझे पक्का नहीं पता कि कौन सा उद्धरण सही है, लेकिन ये दोनों ही उद्धरण हैं। आपने इसे बुराई के लिए लिखा था।

परमेश्वर ने इसे अच्छे के लिए किया था। यह दोहरी कार्य-कारणता है। वही घटना यूसुफ के भाइयों का पाप थी और वह सर्वोच्च प्रावधान था जो परमेश्वर की महिमा और संरक्षण, वाचा के लोगों की रक्षा की ओर ले जाता था, उन्हें अस्तित्व में रहने और आगे बढ़ने में सक्षम बनाता था क्योंकि परमेश्वर अंततः उन्हें महान पलायन में ले जाता है।

मसीह का क्रूस दोहरे कारण का एक सर्वोच्च उदाहरण है। प्रेरितों के काम 2 और 4 के अनुसार, यीशु को दुष्ट लोगों के हाथों क्रूस पर चढ़ाया गया था, लेकिन उन्होंने वही किया जो परमेश्वर ने उनके लिए पहले से तय किया था। मानवीय पाप, ईश्वरीय संप्रभुता और ईश्वरीय कृपा बुराई पर हावी हो जाती है और बुराई के सबसे बड़े कार्य, सबसे बड़ी भलाई को सामने लाती है।

और फिर, मैं यह कहूंगा, हम इस कार्य में परमेश्वर को पूरी तरह से नहीं समझ सकते। हम मापदंड तय कर सकते हैं, पूर्ण ईश्वरीय संप्रभुता, वास्तविक मानवीय जिम्मेदारी, ओवरलैप और दोहरी कार्य-कारण; कम से कम कुछ कार्यों को शास्त्रों में इस तरह से समझाया गया है, और और भी बहुत कुछ है। यशायाह में, अशशूर परमेश्वर के क्रोध की छड़ी है, जो उत्तरी राज्य, इस्राएल को दंडित करता है।

इस्राएल के पाप, उनकी असफल स्वतंत्रता और जिम्मेदारी अशशूर के न्याय को लाती है। परमेश्वर संप्रभुतापूर्वक अशशूर का उपयोग करता है। सन्हेरीब ने यह नहीं कहा, ओह मुझे देखने दो, प्रभु कहते हैं, क्या तुम मजाक कर रहे हो? नहीं, उसने निर्दयतापूर्वक उत्तरी राज्य को नष्ट कर दिया।

और फिर भगवान कहते हैं, और मैं अपने क्रोध की छड़ी को दंडित करने जा रहा हूँ। यह उतार-चढ़ाव, मानवीय जिम्मेदारी, ईश्वरीय संप्रभुता, मानवीय जिम्मेदारी, यह हमारी समझ से परे है। लेकिन हम मापदंड निर्धारित कर सकते हैं।

पूर्ण ईश्वरीय संप्रभुता सत्य है, लेकिन हम इसे रद्द कर देते हैं। हम भाग्यवाद को अस्वीकार करते हैं। इस ईश्वरीय पूर्ण संप्रभुता और भाग्यवाद के बीच क्या अंतर है? अंतर यह है कि वास्तविकता का ईश्वर, शास्त्रों का ईश्वर, प्रोविडेंस का ईश्वर, मोचन का ईश्वर एक व्यक्ति है। उसके पास गुण हैं, उस पर भरोसा किया जा सकता है।

हम ग्रीक नियति के अधीन नहीं हैं। नहीं, नहीं, परमेश्वर ही प्रभारी है। परमेश्वर ही प्रभारी है, जो इस्राएल के साथ वाचा बाँधता है, अपने लोगों के प्रति वचनबद्ध है।

दूसरी ओर, वास्तविक मानवीय जिम्मेदारी है। लेकिन दार्शनिकों के अनुसार इसके विपरीत कोई पूर्ण शक्ति नहीं है। प्राणी अंततः निर्माता की इच्छा को विफल नहीं करेगा।

और यह हमें बिल्कुल इसी बिंदु पर लाता है। यूहन्ना में चुनाव की तीन तस्वीरें हैं: पिता द्वारा लोगों को बेटे को देना, कई अवसरों पर मुख्य तस्वीर, और अध्याय 17 में इसकी शक्तिशाली उपस्थिति। अध्याय 15, श्लोक 16 और 19 में विशिष्ट रूप से, चुनाव का लेखक बेटा है।

तीसरी तस्वीर परमेश्वर के लोगों और उन लोगों की पूर्ववर्ती पहचान है जो परमेश्वर के लोग नहीं हैं क्योंकि जाहिर है, कुछ लोगों को चुनने में, परमेश्वर ने दूसरों को नहीं चुना। रोमियों 9 की भाषा लोगों के भाग्य के पीछे परमेश्वर को समान रूप से दोषी ठहराती है। लेकिन जिस तरह से मैं इसे कहता हूँ, मुझे उस समय कॉन्वेंट सेमिनरी में अपने वरिष्ठ सहयोगी डेविड जोन्स के विचारों को पढ़ने, सुनने या पढ़ने का सौभाग्य मिला, जो तब से प्रभु के पास चले गए हैं।

उन्होंने मेरी शब्दावली का इस्तेमाल नहीं किया, लेकिन हमने बिल्कुल वही बात सिखाई। भगवान हर किसी के भाग्य के प्रभारी हैं। वह हर किसी के भाग्य के पीछे खड़े हैं, लेकिन वह ऐसा करते हैं, मेरी भाषा विषम है।

वह चुने हुए लोगों के मामले में सक्रिय है। गैर-चुने हुए लोगों के बारे में, वह केवल आदेश देता है, वह निर्धारित करता है, वह उन्हें उनके पापों का फल भोगने की अनुमति देने की योजना बनाता है। वे क्रोध के पात्र हैं, जो विनाश के लिए पहले से तैयार हैं।

यह निष्क्रिय, तैयार है। दया के पात्रों के बारे में, पौलुस लिखता है कि संत दया के पात्र हैं जिन्हें उसने महिमा के लिए पहले से तैयार किया है। अर्थात्, परमेश्वर अपने लोगों के चुनाव में अधिक सक्रिय है।

लेकिन चुनने में, उसने सभी को नहीं चुना। और कुछ को चुनने में, उसने दूसरों को छोड़ दिया। यूहन्ना 17, पिता, आपने पुत्र को सभी मनुष्यों पर प्रभु बनाया, ताकि वह उन लोगों को अनन्त जीवन दे सके जिन्हें आपने उसे दिया है।

हम इसे देखते हैं, और मुझे खेद है, मुझे खेद नहीं है। इसे दोहरा पूर्वनिर्धारण कहा जाता है। यहाँ एक और चार्ट है।

एक बड़ा चक्र वह है जो घटित होने वाली हर चीज़ पर ईश्वर के नियंत्रण को दर्शाता है। हम इसे पूर्वनिर्धारण कहते हैं। यानी ईश्वर पहले से ही आदेश दे रहा है।

बड़ा चक्र। और उस चक्र के भीतर बहुत सी चीज़ें हैं, जिसमें ईश्वर का दैवी नियंत्रण भी शामिल है। उसका दैवी नियंत्रण सबसे पवित्र, बुद्धिमान और शक्तिशाली है, जो उसके सभी प्राणियों और उनके सभी कार्यों को संरक्षित और नियंत्रित करता है।

वेस्टमिंस्टर शॉर्टर कैटेचिज्म ने इस सवाल का जवाब दिया कि प्रोविडेंस क्या है? यह ईश्वर का सबसे पवित्र, बुद्धिमान और शक्तिशाली है, जो अपने लक्ष्यों, अपने सभी प्राणियों और उनके सभी कार्यों की ओर निर्देशित करते हुए, उन्हें संरक्षित, बनाए रखता, बनाए रखता और नियंत्रित करता है। प्रोविडेंस बड़े पूर्वनिर्धारण चक्र के भीतर फिट बैठता है। लेकिन हम पूर्वनिर्धारण चक्र के भीतर एक और उपसमूह में रुचि रखते हैं, और वह है पूर्वनियति।

और मैंने इसे बनाया नहीं है। क्या मैं कह सकता हूँ कि मुझे यह पसंद नहीं है? मैं ऐसा नहीं कह सकता क्योंकि बाइबल यही सिखाती है। यह मेरा पसंदीदा सिद्धांत नहीं है, लेकिन पॉल इसे सिखाता है।

1 पतरस 2 में इसकी शिक्षा दी गई है। पॉल ने इसे न केवल अध्याय 9 में, बल्कि रोमियों के अध्याय 11 में भी पढ़ाया है। जॉन ने इसे चार स्थानों पर लिखा है, जैसा कि कोस्टनबर्गर ने मुझे दिखाया।

यूहन्ना 10:26. तुम विश्वास नहीं करते क्योंकि तुम मेरी भेड़ें नहीं हो। मैं इसे फिर से कहूँगा।

आप इसे बदल सकते हैं। मैं यह नहीं कह रहा कि हम यहाँ ऐसा करें और पाठ बदल दें, लेकिन यह सच है। आप मेरी भेड़ नहीं हैं क्योंकि आप विश्वास नहीं करते।

चौथे सुसमाचार में यह बात और भी बार-बार दोहराई गई है। शब्द नहीं, बल्कि विचार। लोग अपने अविश्वास के कारण खो गए हैं।

पाप के बारे में बात करने का जॉन का मुख्य तरीका अविश्वास है, यीशु पर विश्वास न करना या कभी-कभी यीशु पर अपर्याप्त विश्वास करना। लेकिन वह यहाँ ऐसा नहीं कहता। तुम विश्वास नहीं करते क्योंकि तुम मेरी भेड़ें नहीं हो। मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं। मैं उन्हें जानता हूँ। वे मेरा अनुसरण करते हैं।

मैं उन्हें अनंत जीवन देता हूँ, और वे कभी भी नाश नहीं होंगे। यहाँ मुद्दा यह है। यूहन्ना में तीसरा चुनाव मूल भाव उन लोगों की पूर्व पहचान है जो परमेश्वर के चुने हुए हैं और जो गैर-चुने हुए हैं।

मैं उन्हें भेड़ और बकरी कहूँगा। भेड़ें विश्वास करने से पहले भेड़ होती हैं, और एक निश्चित अर्थ में, वे इसलिए विश्वास करती हैं क्योंकि वे भेड़ हैं। बेशक, दूसरा, आप कथन को उलट सकते हैं, और यह जॉन के सुसमाचार में सच है।

वे भेड़ हैं क्योंकि वे विश्वास करते हैं। लेकिन यहाँ, पर्दा उठ जाता है, और हम पर्दे के पीछे होते हैं, और हम परमेश्वर की योजना को देखते हैं। पूरी तरह से नहीं, पूरी तरह से नहीं, लेकिन सच में।

मेरी भेड़ें मुझ पर विश्वास करती हैं। वे मेरी आज्ञा मानती हैं। मैं उन्हें अनंत जीवन देता हूँ।

वे हमेशा के लिए बचाए जाएँगे। तुम विश्वास नहीं करते, आखिरकार, क्योंकि तुम मेरी भेड़ नहीं हो। ओह, लड़का।

अंततः, यह मुझे परेशानी में डालता है। कारण कि लोग क्यों बचाए जाते हैं। जॉन के सुसमाचार से भी बड़ा एक व्यवस्थित धार्मिक विचार।

अंततः, लोग इसलिए बचाए जाते हैं क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें संसार की रचना से पहले उद्धार के लिए चुना था। इफिसियों 1:4. क्योंकि परमेश्वर ने हमें मसीह यीशु में अनुग्रह दिया, 2 तीमुथियुस 1, 9, अनंत युगों से पहले। तब हम अस्तित्व में नहीं थे।

बाइबल कभी नहीं कहती कि परमेश्वर ने हमारी प्रतिक्रिया को पहले से ही जान लिया और उसके आधार पर अपना चुनाव किया। यह कहती है कि, अपने सर्वोच्च अनुग्रह से, उसने हमें उद्धार के लिए चुना। यह सच है।

क्या यह भी सच नहीं है कि जो लोग यीशु पर विश्वास करते हैं वे बचाए जाते हैं? बेशक, यह सच है। इसका मुख्य कारण परमेश्वर का हमें चुनना है। इससे यह तथ्य खत्म नहीं होता कि हमें यीशु पर विश्वास करना था।

यह निरर्थक नहीं है। वास्तव में, कभी-कभी कारण-और-परिणाम संबंध होता है। उन सभी को अनंत जीवन के लिए नियुक्त किया गया है।

प्रेरितों के काम। मैंने इसे खो दिया है। अनन्त जीवन के लिए नियुक्त सभी लोगों ने विश्वास किया।

प्रेरितों के काम: अरे, प्रभु पापियों के प्रति भला है। प्रेरितों के काम 13:48.

जितने लोग अनन्त जीवन के लिए नियुक्त किए गए थे, उन्होंने विश्वास किया। इसलिए, हम विश्वास में आगे बढ़ने वाले परमेश्वर के चुने हुए लोग हैं। अंततः, हम इसलिए बच गए क्योंकि, सबसे पहले, हम इसलिए बच गए क्योंकि हमने प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास किया।

अब मुझे समझ आ गया। मुझे आदेश मिल गया है कि मैं यह करना चाहता हूँ। हम बच गए क्योंकि हमने विश्वास किया।

क्या यही अंतिम कारण है? क्या यह सच है? हाँ, यह सच है। और मैं जो कुछ भी कहता हूँ, उससे यह बात कमज़ोर नहीं होती। क्या यही अंतिम कारण है? नहीं।

हम बहुत उलझन में हैं। हम विश्वास नहीं कर सकते थे और पवित्र आत्मा ने हमारे दिलों को खोल दिया। उसने हमें उसी क्षण नया जीवन दिया, लेकिन हमें विश्वास करने में सक्षम बनाया।

आत्मा का कार्य। क्या यही अंतिम कारण है? नहीं। आत्मा अपना कार्य केवल इसलिए लागू करती है क्योंकि यीशु मरा और फिर से जी उठा।

सुसमाचार आत्मा का कार्य नहीं है। मैं विश्वास करता हूँ कि सुसमाचार नहीं है। नहीं।

मैं सुसमाचार में आत्मा के कार्य के कारण विश्वास करता हूँ। इसलिए, मेरे विश्वास और आत्मा द्वारा मेरे हृदय को खोलने से भी अधिक महत्वपूर्ण है यीशु का मरना और फिर से जी उठना ताकि आप और मेरे जैसे पापियों को बचाया जा सके। क्या यह अंतिम कथन है? नहीं।

अंतिम कथन यह है कि दुनिया की नींव रखने से पहले, परमेश्वर ने हमें मसीह में चुना। इफिसियों 1, 4. 2 तीमुथियुस 1, 9. रोमियों 9. मैं इन सभी जगहों पर नहीं जा रहा हूँ। क्या कोई भी अधिक अंतिम कारण कम अंतिम कारणों को निष्प्रभावी कर देता है? नहीं, वे ऐसा नहीं करते।

और फिर, यह कुछ हद तक रहस्यमय है। लेकिन, और मैं अब नकारात्मक पक्ष पर बात करने जा रहा हूँ। लोग खो जाते हैं क्योंकि वे अपने पापों में मर जाते हैं।

रोमियों 8. यूहन्ना 8, मुझे क्षमा करें, दो बार। यूहन्ना 8:21, और 24 में दो बार। यूहन्ना 8:21.

यूहन्ना 8:24. अपने पापों में मरो, अपने पापों में मरो। अभी, लोग खोये हुए हैं क्योंकि वे यीशु पर विश्वास नहीं करते।

क्या यही अंतिम कारण है? व्यक्तिगत पाप। वास्तविक पाप। धार्मिक शब्द।

यदि आप नरक के अंशों का अध्ययन करें तो यह वैध कारण है, लोग अपने पापों के कारण नरक में जाते हैं। क्या यह अंतिम कारण है? नहीं। उत्पत्ति 3 में रिकॉर्ड है, और रोमियों 5 में मूल पाप के सिद्धांत की व्याख्या की गई है।

आदम हम सभी के लिए परिवीक्षा पर था। जब वह गिरा, तो हम भी गिर गए। उसके पतन ने हमें सक्षम बनाया, अक्षम बनाया, ऐसा बनाया कि हम भ्रष्ट हो गए, हम आध्यात्मिक रूप से प्रदूषित हो गए, और हम परमेश्वर के सामने दोषी हैं और खुद को बचाने में असमर्थ हैं।

लोग अपने अविश्वास के कारण खो जाते हैं। लोग वास्तविक पाप के कारण, मूल पाप के कारण खो जाते हैं। क्या यह अंतिम कथन है? नहीं।

वे ठोकर खाने की चट्टान और अपराध की चट्टान पर ठोकर खाते हैं, 1 पतरस 2, क्योंकि शायद यह श्लोक 9 है। इसके लिए, उन्हें नियुक्त किया गया था। निंदा। यहाँ मेरा चार्ट है, समाप्त।

बड़ा वृत्त, पूर्वनिर्धारण। इसके भीतर, ईश्वर की नियति और कई अन्य संप्रभु क्रियाएँ। पूर्वनिर्धारण का उपसमूह।

दोहरा पूर्वनियति। सकारात्मक पूर्वनियति चुनाव है। परमेश्वर अपने लिए लोगों का चयन करता है।

नकारात्मक, इसलिए कहा जाए तो, पूर्वनियति को निंदा कहा जाता है। परमेश्वर ने कुछ लोगों को चुनने में लोगों को छोड़ दिया; उसने दूसरों को नहीं चुना। वे महिमा के लिए पहले से तैयार दया के पात्र हैं, रोमियों 9। वे क्रोध के पात्र हैं।

दया के पात्र जिन्हें उसने महिमा के लिए पहले से तैयार किया था, अधिक सक्रिय। वे विनाश के लिए तैयार क्रोध के पात्र हैं। रोमियों 11, आरंभ में, इस्राएल चुने हुए लोगों और अन्य लोगों से मिलकर बना है।

चुने हुए और नकारे हुए। यूहन्ना द्वारा चुनाव की तीसरी तस्वीर, सकारात्मक चुनाव, परमेश्वर के लोगों की पूर्ववर्ती पहचान है। हम इसे यूहन्ना 10 में देखते हैं।

मेरी भेड़ें मुझ पर विश्वास करती हैं, मेरी आज्ञा मानती हैं और मैं उनकी रक्षा करता हूँ। हम इसे यूहन्ना 8, 42 में भी देखते हैं, यीशु और यहूदी नेताओं के बीच उस पूरे कुश्ती मैच में। मैं जानता हूँ कि तुम यहूदी हो।

मैं जानता हूँ कि तुम अब्राहम के वंशज हो, लेकिन जिस तरह से तुम रहते हो, उसके मामले में तुम उसके रिश्तेदार नहीं हो। तुम सच्चे इस्राएली नहीं हो। 8:42, अगर परमेश्वर तुम्हारे पिता होते, तो तुम मुझसे प्यार करते।

ऐसे लोग भी हैं जो विश्वास करने से पहले ही ईश्वर की संतान बन जाते हैं। मैं समझता हूँ कि बाइबल कहती है कि आप विश्वास करते हैं और ईश्वर की संतान बन जाते हैं। यह इस पूर्ववर्ती या पूर्व पहचान व्यवसाय को भी सिखाता है, और हमें इसे बड़ी तस्वीर में शामिल करना होगा।

हे भगवान। हमने पहले विश्वास के बारे में बात की थी, और हमने देखा कि यह कितना महत्वपूर्ण था, और हमने विश्वास और अविश्वास की वास्तविकता की पुष्टि की। अब हम पुष्टि करते हैं, चुनाव की शिक्षा देते हैं।

देखिए, इन तीन तस्वीरों में यह हकीकत है। परमेश्वर के लोग भेड़ें हैं। वे परमेश्वर की संतान हैं।

इसी कारण से भेड़ें विश्वास करती हैं। इसी कारण से परमेश्वर के बच्चे यीशु पर विश्वास करते हैं। कोस्टेनबर्गर ने मुझे और भी आयतें दिखाई जो निंदा से संबंधित हैं।

एंद्रियास कोस्टेनबर्गर, जॉन के सुसमाचार और उनके पत्रों का धर्मशास्त्र, पृष्ठ 459. जॉन के 8:47. जो कोई भी परमेश्वर का है वह परमेश्वर के वचनों को सुनता है।

यह भी सकारात्मक पहलू है। जो कोई भी परमेश्वर का है, वह परमेश्वर के वचनों को सुनता है। परमेश्वर का होना विश्वास की ओर ले जाता है, परमेश्वर के संदेश पर विश्वास करने की ओर ले जाता है।

आप उन्हें इसलिए नहीं सुनते क्योंकि आप ईश्वर के नहीं हैं। मेरा वचन। अच्छा ईश्वर हमारे लिए मामले को जटिल बना देता है।

वह इसे छोड़ता ही नहीं। विश्वास करो, और तुम बच जाओगे। विश्वास मत करो, और तुम बच नहीं पाओगे।

वह हमें यह, वास्तव में, दोहरा पूर्वनियतिवाद देता है। 10, 25, 26. हमने इसे बार-बार देखा है।

तुम विश्वास नहीं करते क्योंकि तुम मेरी भेड़ नहीं हो। 12. मैं उस पर वापस आऊंगा।

14, 17. मैं पिता से विनती करूंगा, 14, 16. वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे, अर्थात् पवित्र आत्मा, अर्थात् सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, और जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता।

दुनिया सत्य की आत्मा को ग्रहण करने में असमर्थ है क्योंकि वह न तो उसे देखती है और न ही उसे जानती है। इसके विपरीत, आप उसे जानते हैं। इसलिए यहाँ यह निंदा का मामला है।

8:47. 10:25, 26. 14:17.

और मुझे लगता है कि कोस्टेनबर्गर सही है। 12, अध्याय 12, 37 से 40. वे विश्वास नहीं कर सके।

जब यीशु ने ये बातें कहीं, यूहन्ना 12:36, तो वह चला गया और उनसे छिप गया। उसने बस इतना कहा कि वह दुनिया की रोशनी है। जॉन डोड, सीएच डोड, कहते हैं कि अगले भाग के लिए उनका शीर्षक यह है कि प्रकाश छिपा हुआ है।

प्रकाश खुद को छिपा लेता है। यह डरावना है, लेकिन यह अच्छा है। जब यीशु ने ये बातें कहीं, तो वह चला गया और उनसे छिप गया।

वे ज्योति को अस्वीकार करते हैं, और ज्योति छिप जाती है। यद्यपि उसने उनके सामने बहुत से चिन्ह दिखाए थे, फिर भी उन्होंने उस पर विश्वास नहीं किया। ताकि यशायाह का वचन भविष्यद्वक्ता यशायाह के द्वारा पूरा हो सके।

उनका अविश्वास भविष्यवाणियों को पूरा करता है। हे प्रभु, हमसे सुनी बातों पर किसने विश्वास किया है? प्रभु का भुजबल किस पर प्रकट हुआ है? इसलिए, वे विश्वास नहीं कर सके। क्योंकि

फिर से, यशायाह ने कहा, उसने उनकी आँखें अंधी कर दी हैं, उनके हृदय कठोर कर दिए हैं, कहीं ऐसा न हो कि वे अपनी आँखों से देखें, अपने हृदय से समझें और फिरें, और मैं उन्हें चंगा कर दूँ।

यह अध्याय छह जैसा लगता है। यह कहना कठिन है, लेकिन मेरे लिए सोला स्क्रिप्टुरा का मतलब यह नहीं है कि हम अपने धर्मशास्त्र में केवल बाइबल का उपयोग करते हैं। हम निश्चित रूप से अन्य अधिकारियों से, तर्क से अपील करते हैं, मुझे उम्मीद है कि हम अपने तर्क और यहां तक कि अनुभव का भी उपयोग करेंगे।

लेकिन यह सब लगातार और जानबूझकर परमेश्वर के वचन के अधीन है, और केवल बाइबल ही हमारा अंतिम अधिकार है। जब हम ऐसा करेंगे, तो मैं आपके सामने समर्पण करूंगा, और मैं इसे सुसमाचार नहीं बनाऊंगा। मैं अपने आर्मीनियाई भाइयों और बहनों से प्यार करता हूँ। मैं ईमानदारी से करता हूँ।

मैं उन्हें अपने धर्मशास्त्र को बढ़ावा देने वाली किताबें लिखने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ। ब्रायन शेल्टन, प्रीवेंनिंग्ट ग्रेस पर एक बेहतरीन किताब। देखें कि उन्होंने इसे किसे समर्पित किया है।

उन्होंने इसे एक आर्मीनियाई भाई को भी समर्पित किया जिसने उन्हें पूर्वगामी अनुग्रह सिखाया, जिससे वह अपने मेजबान को थामे रखने में सक्षम हो सके। वैसे भी, जॉन में चुनाव इन तीन चित्रों में दिया गया है। पिता लोगों को बेटे को देता है।

पुत्र चुनावकर्ता है। वह चुनाव का लेखक है, और परमेश्वर के लोगों की एक पूर्ववर्ती या पूर्व पहचान है, साथ ही उन लोगों की भी जो परमेश्वर के लोग नहीं हैं। हमारे अगले व्याख्यान में, हम उद्धार के गौरवशाली और लाभकारी विषय पर आगे बढ़ेंगे जिसे अनन्त जीवन के रूप में देखा जाता है।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा योहानिन धर्मशास्त्र पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 17 है, उद्धार, चुनाव।